707

दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

टेस्ट-6
(प्रश्न पत्र-I)

DTVF / OPT-24 **HL-2406**

निर्धारित समय: तीन घंटे Time Allowed: Three Hours	अधिकतम अंक : 250 Maximum Marks : 250

नाम (Name): Payal Gwalwanshi

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.): ____

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 06, 9 Aug. 2024

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2024] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2024]: 0 8 2 2 5 9 1

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ____ टिप्पणी (Remarks): ____

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - क

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: **10 × 5 = 50**

(क) निराला के प्रगीत

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, मुख्यत: छायावादी कवि है परन्तु उन्होंने प्रगतिवादी काल मे भी कई यथार्थवादी रचनाएँ की है।

प्रगीत एक ऐसी विधा है जिसमे भावनाओ से प्रेरित होकर कविताएँ लिखी जाती है। जिसमे भावनाओ का सहज चित्रण होता है।

निराला के प्रगीत

निराला के प्रगीत सघन आत्मानुभूति और निजता से संबंधित है।

इन्हे कई विषयों मे बाँटा जा सकता है।

1) प्रेम आधारित प्रगीत - जिनमे प्रेम विषय आधारित रचना की गई है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

2) आत्म साक्षात्कार के प्रगीत

3) मृत्यु पर प्रगीत - सरोजस्मृति

4) ऋतु वर्णन पर प्रगीत

5) भक्तिभाव पर प्रगीत - आराधना

निराला की जुही की कली कविता में प्रगीतात्मकता उभरकर आयी है।

कुछ प्रगीतों में अकेलापन, दुख के दर्शन होते है।

स्नेह निर्झर बह गया, रेत ज्यों तन रह गया।

इसके साथ ही उन्होंने नए प्रकार का शब्द विधान किया है। और काव्य का शास्त्रीय ढंग से संगठन किया है।

अतः निराला के प्रगीत हिन्दी साहित्य को महत्वपूर्ण देन है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) घनानंद की काव्य-भाषा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

घनानंद, रीतिकालीन रीतिमुक्त काव्यधारा के कवि हैं। जिन्होंने श्रृंगार रस के सिर्फ संयोग पक्ष की अपेक्षा वियोग पक्ष पर भी पर्याप्त लेखन किया है।

ऐ री रूप अगाधे राधे, राधे राधे राधे
तुमसे मिलने को ब्रजमोहन, कई जतन है साधे

घनानंद की काव्य भाषा

घनानंद की काव्यभाषा पूरे रीतिकाल को महान देन है इसी कारण इन्हें ब्रजभाषा प्रवीन और भाषा नवीन की संज्ञा दी जाती है।

इन्होंने अपनी काव्य भाषा में संस्कृत, फारसी, अरबी, बांग्ला, पंजाबी राजस्थानी आदि कई भाषा के शब्दों को शामिल किया है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मूलतः इन्होंने ब्रजभाषा का प्रयोग किया है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कहा है –

भाषा पर इनका अचूक अधिकार था। हृदय की गहराई से काव्य लिखकर भावनाओं का शुद्ध सम्प्रेषण करने में सक्षम थे।

- भाषा में अलंकारिकता का सुन्दर प्रयोग
  - विरोधाभास अलंकार
    उजरनि बसी है हमारी अखियानी देखो
  - श्लेष अलंकार
    तुम कौन सी पाटी पढ़े हो लला, मन देहु पर लेहु छटाँक नहीं।
- लोकोक्तियों और मुहावरों का प्रयोग
- प्रतीकों और बिम्बों का सुन्दर प्रयोग
- लक्षणा और व्यंजना का सुन्दर प्रयोग
- छंद वैविध्य – कवित्त, सवैया, दोहा।

इस प्रकार पूरे रीतिकाल में घनानंद का भाषा के क्षेत्र में अद्वितीय स्थान है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) संस्मरण 'स्मृति की रेखाएँ'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

संस्मरण विधा, आधुनिक काल की एक महत्वपूर्ण विधा है जिसमें मूलत: पुरानी स्मृतियों को आधार बनाते हुए रचना की जाती है।

स्मृति की रेखाएँ

'स्मृति की रेखाएँ' छायावादी लेखिका महादेवी वर्मा की महान रचना है जिसमें संस्मरण के साथ रेखाचित्र विधा के गुण भी उपस्थित है।

महादेवी वर्मा ने पद्य के साथ गद्य में भी लेखन किया जो सराहनीय है।

स्मृति की रेखाएँ की विशेषता

1) इसमें महादेवी वर्मा ने अपने अतीत

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के रेखाचित्रों को सहृदयतापूर्वक रूपांकित किया है।

- हृदय की गहराईयों से लिखा संस्मरण हिन्दी साहित्य का सर्वश्रेष्ठ संस्मरण संग्रह है।

- जिस तरह महादेवी वर्मा ने काव्य में अपने दुःख, अकेलेपन, अधूरी जिंदगी का वर्णन किया है। इसी प्रकार इस संस्मरण में भी उसी अधूरे जीवन का मर्मभेदी वर्णन रेखाचित्रों के माध्यम से है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) 'आंचलिक कहानी' का परिचय

आँचलिक कहानी, कहानी के क्षेत्र की ऐसी कहानी है जिसमें मूलतः किसी अंचल का भौगोलिक और सांस्कृतिक वर्णन का सूक्ष्म चित्रण किया जाता है।

हिन्दी साहित्य में आंचलिक कहानी लेखन की परम्परा मुख्यतः फणीश्वरनाथ रेणु, राहुल सांकृत्यायन, नागार्जुन, रांगेय राघव, उदयशंकर आदि द्वारा किया गया है।

आंचलिक कहानी की विशेषताएँ

(1) गाँव के स्थानीय क्षेत्र के भौगोलिक विशेषताओं का सूक्ष्म वर्णन

(2) सांस्कृतिक क्षेत्रों जैसे - रहन-सहन, त्यौहार, वेशभूषा, गीत-संगीत,

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नृत्य आदि का विस्तृत वर्णन

(3) ग्रामीण क्षेत्र की सभी क्षेत्रों जैसे राजनीतिक- सामाजिक- आर्थिक समस्याओं का विस्तार से वर्णन

(4) ग्रामीण भाषा का प्रयोग जिसमें स्थानीय मुहावरों, लोकोक्तियों और देशज भाषा का प्रयोग

(5) अंचल ही नायक के रूप

प्रमुख आंचलिक कहानियाँ

फणीश्वरनाथ रेणु - दीर्घतपा
- रसप्रिया
- तीर्थोदक
- मारे गए गुलफाम
- अन्धे आदमी
- तीन बिंदिया

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) 'पल्लव की भूमिका' का महत्त्व

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'पल्लव की भूमिका' को सुमित्रानंदन पंत द्वारा लिखा गया है। यह विलियम वर्ड्सवर्थ के लिरिकल बैलेड्स से प्रभावित है। जिसमें स्वच्छंदतावादी विचारधारा का मुखर वर्णन है।

'पल्लव की भूमिका' को छायावाद का घोषणापत्र की संज्ञा दी जाती है।

इसमें कविता लेखन के विभिन्न पक्षों का वर्णन किया गया है।

पल्लव की भूमिका का महत्व

(1) इसमें काव्यभाषा के रूप में खड़ी बोली के प्रयोग का समर्थन किया गया

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(२) अलंकार की सजावट के स्थान पर भावाभिव्यक्ति को महत्व

(३) जटिल शब्दों के स्थान पर सरल शब्दों का प्रयोग

(4) प्रतीकों, बिम्बों, उपमाओं का त्याग

(5) कविता के कलापक्ष का सूक्ष्म विवेचन

(6) रीतिवादी मान्यताओं का विरोध

(7) पर्यायवाची शब्दों चमत्कारी प्रभाव

इस प्रकार पल्लव की भूमिका काव्य रचना में एक नई रूपरेखा को प्रस्तुत किया जिसने छायावादी कवियों को सही मार्गदर्शन दिया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) क्या गोस्वामी तुलसीदास का कलियुग-वर्णन तद्‌युगीन अमानवीय स्थितियों का ही आख्यान है? सुचिंतित उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) रीतिकालीन कवियों के आचार्यत्व पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिन्दी साहित्येतिहास-लेखन परंपरा में 'शिवसिंह सरोज' की सीमाओं एवं महत्त्व पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) हिंदी गद्य के विकास में बालकृष्ण भट्ट के योगदान पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी की मनोवैज्ञानिक उपन्यासधारा पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) दिनकर की काव्यकृति 'रश्मिरथी' के प्रतिपाद्य पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) प्रेमचंदपूर्व हिन्दी उपन्यास पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

उपन्यास से तात्पर्य है

उप (निकट) + न्यास (थाती) अत: ऐसी विधा जो यथार्थवाद पर आधारित हो जिसमें जीवन का वास्तविक और निकटता से वर्णन हो।

उपन्यास लेखन की शुरुआत मूलत: आधुनिक युग में हुआ जब गद्य का विकास हुआ, शहरी मध्यवर्ग का पद्य से मोहभंग, खड़ी बोली का आगमन, प्रेस का विकास आदि ऐसी कई परिस्थितियाँ थी जिन्होंने उपन्यास के विकास में योगदान दिया।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रेमचंद पूर्व उपन्यास

प्रेमचंद पूर्व उपन्यासों में मुख्यतः जासूसी आधारित और ऐय्यारी-तिलस्मी उपन्यासों की रचना की गई। जिसकी कथावस्तु काल्पनिक और पात्र अविश्वसनीय होते थे।

इन उपन्यासों में आदर्शवाद और रोमानियत के तत्व हावी थे। प्रेमचंद पूर्व उपन्यासों को तीन वर्गों में बांटा जा सकता है।

① **सुधारवादी और उपदेशआधारित उपन्यास** - इन उपन्यासों में मूलतः आदर्शवाद, नैतिकता और समाज सुधार की भावना परिलक्षित होती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उदा० -
श्रीनिवास दास - परीक्षागुरु
श्रद्धाराम फिल्लौरी - भाग्यवती
बाल कृष्ण भट्ट - देवरानी जेठानी की कहानी

(2) मनोरंजनपरक उपन्यास - इसमें मुख्यतः जासूसी और ऐय्यारी-तिलस्मी किस्म के उपन्यासों को शामिल किया जाता है। जिसकी कथावस्तु अविश्वसनीय और काल्पनिक होती है।

उदा०
देवकीनंदन खत्री - चन्द्रकांता, चन्द्रकांता संतति
किशोरीलाल गोस्वामी - तिलिस्म महल
गोपालराम गहमरी - सरकारी लाश, जासूस पर जासूसी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

3) ऐतिहासिक उपन्यास - इन उपन्यासों में इतिहासबोध को मुख्य स्थान। ऐतिहासिक घटनाओं, कथाओं को उपन्यास में शामिल किया गया ताकि अतीत के गौरव से नवजागरण की चेतना और सांस्कृतिक चेतना जाग्रत की जा सके।

उदा०
किशोरीलाल गोस्वामी - तारा,
रजिया सुल्तान

इस प्रकार प्रेमचंद से पूर्व उपन्यासों में यथार्थवाद की अनुपस्थिति थी इसलिये कहा जाता है-
प्रेमचंद ने उपन्यास के क्षेत्र में रचना ही नहीं की अपितु कायाकल्प भी कर दिया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) देश-विभाजन के संदर्भ में यशपाल के उपन्यास 'झूठा सच' का अनुशीलन कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यशपाल मुख्यतः प्रगतिवादी विचारधारा के लेखक हैं उन्होंने प्रगतिवादी विचारधारा से प्रेरित होकर कई रचनाएँ की हैं जैसे - दादा कामरेड, पार्टी कामरेड, देशद्रोही आदि प्रमुख हैं।

इसके साथ ही नारी समस्या पर आधारित उपन्यास दिव्या में भी मार्क्सवादी विचारधारा के स्पष्ट प्रभाव दिखाई देते हैं।

साथ ही उन्होंने देशविभाजन के संदर्भ में भी कई उपन्यास लिखे हैं जिसमें झूठा सच उपन्यास महत्वपूर्ण है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

देश विभाजन के संदर्भ मे

झूठा सच

इस उपन्यास मे स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश विभाजन की विभीषिका का चित्रण किया है।

संवेदना

(1) देशविभाजन के परिणाम बढ़ती साम्प्रदायिकता से समाज मे उत्पन्न होने वाली हिंसा और झगड़े की भावना का वर्णन है।

(2) साथ ही मार्क्सवाद से प्रभावित उच्चवर्ग द्वारा निम्न वर्ग के शोषण का भी वर्णन है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(3) यशपाल द्वारा न तो हिन्दू समुदाय का और न ही मुस्लिम समुदाय का समर्थन अपितु दोनों समुदायों का पक्षरहित चित्रण किया गया है।

(4) इसकी मूल संवेदना में यह है कि मनुष्य के चरित्र का निर्माण परिवेश की परिस्थितियों के अनुसार होता है।

(5) साथ ही किसी दो समुदाय की हिंसा का खामियाजा सम्पूर्ण समुदाय को चुकाना पड़ता है।

इस प्रकार यशपाल के उपन्यास झूठा सच में आजादी के बाद की स्थिति का वास्तविक चित्रण किया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अकहानी आन्दोलन का परिचय देते हुए उसकी प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नई कहानी आन्दोलन के अंतर्गत ही अकहानी आंन्दोलन का विकास हुआ। जिसमें स्वतंत्रता से मोहभंग मध्यमवर्गीय वर्ग के जीवन की समस्याओं, संबंधों के हरन का वर्णन है।

अकहानी आंदोलन - इसका प्रारंभ फ्रांस के एन्टी स्टोरी मूमेंट से माना जाता है। जिसमें पारम्परिक कहानी लेखन की संरचना को त्याग कर संवेदनाहीन, शिल्पहीन कहानी लेखन को बढ़ावा दिया गया।

प्रमुख कहानीकार

गंगाप्रसाद विमल - प्रश्नचिन्ह

दूधनाथ सिंह - रीछ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अकहानी आंदोलन की प्रवृत्तियाँ

1) पारम्परिक मूल्यों का अमूल्यन

इसमें मुख्यतः पारम्परिक नैतिक मूल्यों का ह्रास हुआ और इसके स्थान पर अजनबीपन, आत्मनिर्वासन, विवाहेत्तर संबंध, तलाक आदि में वृद्धि हुई।

२) पारिवारिक संबंधो का टूटना - बदलते परिदृश्य के साथ स्वतंत्रता को अधिक महत्व जिससे संयुक्त परिवार विच्छेद और एकल परिवार को मान्यता।

3) यौन चेतना केन्द्र में - इस काल की कहानियों में मूलतः यौन और काम-वासना संबंधों ~~को~~ विषयों पर आधारित रचना की गई।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

4) नैतिक मूल्यों का ह्रास - पर-स्त्री और पर-पुरुष संबंधों की स्वीकृति। कई स्थानों पर समलैंगिक संबंध का भी वर्णन

5) अतिशय आधुनिकता - इन कहानियों में आधुनिकता के चरम स्तर को समाहित किया गया।

शिल्प के स्तर पर विशेषताएँ

1) कथानक का टूटना
2) शिल्प विहीन कहानियाँ
3) अश्लील एवं गालीनुमा भाषा का प्रयोग
4) मूलतः मानसिक ढंग से ग्रसित चरित्रों का वर्णन

इस प्रकार अकहानी में चरम यथार्थवाद के साथ संवेदना और शिल्प का ह्रास हुआ।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: **10 × 5 = 50**

(क) 'आधे-अधूरे' की 'सावित्री' का चरित्र

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'आधे-अधूरे' नाटक की रचना आधुनिक काल के महान नाटककार मोहन राकेश द्वारा लिखा गया है।

'आधे-अधूरे' मे मूलत: सार्त्र के अस्तित्ववादी दर्शन का प्रभाव है जिसके तहत स्त्री-पुरूष संबंध का टूटन, नारी स्वतंत्रता, मानसिक द्वंद्व, यौन चेतना और पारिवारिक संबंधो के कमजोर होने जैसी विशेषताओं का वर्णन है।

इस नाटक मे सावित्री और उसका पति दोनों ही एक-दूसरे असंतुष्ट है और आधी-अधूरी जिंदगी जीने को मजबूर है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सावित्री का चरित्र

1) सावित्री एक मध्यमवर्गीय महिला है जो मानसिक द्वंद्व का सामना करती ~~[illegible]~~ है।

2) पति से असंतुष्ट होने पर वह कई लोगों से मिलती है परन्तु उसे सभी में कुछ न कुछ अधूरापन दिखाई देता है।

3) सावित्री अपने पति को छोड़ना चाहती है परन्तु वह ऐसा नहीं कर पाती है।

अतः समस्त नाटक ही मनुष्य की पूरी न होने वाली इच्छाओं और अधूरे जीवन पर आधारित है जो आज भी प्रासंगिक है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ख) विद्यापति की राधा

साहित्य के क्षेत्र में राधा एक ऐसा चरित्र है जिसका इतिहास जयदेव से आरंभ होकर वर्तमान तक साहित्य लेखन में दिखाई देता है।

जहाँ जयदेव ने राधा को युवती के रूप में, सूरदास ने 7 वर्ष की बालिका के रूप में प्रस्तुत किया है वहीं विद्यापति ने राधा को किशोरी के रूप में प्रस्तुत किया है जो परिपक्व, समझदार, चंचल, सुंदर, आकर्षक है।

विद्यापति की राधा

सामान्यत: कवियों ने कृष्ण को राधा से अधिक महत्व दिया है परन्तु विद्यापति ने दोनों को समान महत्व दिया और कहीं-कहीं राधा को अधिक महत्व दिया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

- राधा का सौन्दर्य अपरूप है उसका चेहरा कमल की तरह और शरीर कनकवल्लरी के समान है।

- राधा की शारिरीक और मानसिक मानसिक विशेषताओं का सघनता के साथ वर्णन।

- कृष्ण के प्रति एकनिष्ठ प्रेम, त्याग और विरह में मूर्च्छित होने के स्थान पर समाजसेवा करती है।

"जनम अवधि भर रूप निहारल,
नयन न तिरपित भेल"

वहीं दूसरी ओर कृष्ण राधा की एक झलक पाकर ही मूर्च्छित हो जाते है।

इस प्रकार विद्यापति ने राधा को अधिक महत्व देकर एक नया एवं अद्वितीय प्रयोग किया। जो सराहनीय है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'परख' उपन्यास की 'कट्टो'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

'परख' उपन्यास मनोवैज्ञानिक उपन्यास धारा के महान उपन्यासकार जैनेन्द्र का उपन्यास है।

परख में मुख्यत: नारी जीवन के संघर्ष; मानसिक द्वंद्व, त्याग की भावना, आध्यात्मिका का समावेशन किया गया है।

परख उपन्यास में चार प्रमुख पात्र हैं- कट्टो, बिहारी, गरिमा और मनोहर। कट्टो मनोहर को प्रेम करती है परन्तु उसका विवाह बिहारी से होता है और मनोहर का विवाह बिहारी की बहन गरीमा से होता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कारो का चरित्र

1) कारो का चरित्र त्याग की भावना, आध्यात्मिक प्रेम आदि से परिपूर्ण है।

2) वह प्रेम का त्याग कर बिहारी से विवाह कर लेती है। समझौतावादी चरित्र

3) अंत में बिहारी के साथ आध्यात्मिक स्तर में संबंध स्थापित कर, बिहारी से दूर चली जाती है और समाज सेवा में लग जाती है।

बिहारी भी कारो का सम्मान करता है और गाँव में कृषि कार्य में लग जाता है।

इस प्रकार कारो में प्रसाद की श्रद्धा के गुण स्पष्ट होते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) मिश्रबंधु विनोद

हिन्दी साहित्य के इतिहास में कई औपचारिक और अनौपचारिक ग्रंथ लिखे गये।

हिन्दी साहित्य इतिहास लेखन

औपचारिक ग्रंथ — अनौपचारिक ग्रंथ

मिश्रबंधु विनोद

मिश्रबंधु विनोद की रचना तीन रचनाकारों द्वारा की गई थी जो है श्याम बिहारी, शुकदेव बिहारी और गणेश बिहारी मिश्र। इसलिये इसका नाम मिश्र बंधु विनोद रखा गया।

इसमें लगभग 500 कवियों की रचनाओं को शामिल किया गया है, साथ ही कालविभाजन और नामकरण हेतु

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कालानुसार प्रयोग, न कि वर्णानुसार प्रयोग किये गये।

~~मिश्र~~ बंधु विनोद के विषय में रामचंद्र शुक्ल ने कहा है -

" कवियों के परिचयात्मक विवरण मैंने प्राय! मिश्र बंधु विनोद से ही लिये "

- कालों का विभाजन परिपक्व है - 8 कालों में विभाजन
  आरंभिक काल, माध्यमिक काल, अलंकृत काल को दो-दो भागों में और परिवर्तन काल और वर्तमान काल।
- रचना हेतु तुलना पद्धति का प्रयोग परन्तु दृष्टिकोण पारम्परिक और काव्यशास्त्रीय रहा है।
- यह एक समृद्ध, प्रामाणिक स्रोत रहा है इसमें तथ्यों का महत्व न कि इतिहास बोध और कल्पनाशीलता को।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) कहानी का रंगमंच

कहानी का रंगमंच से आशय ऐसे रंगमंच से है जिसमें रंगमंच में नाटकों के मंचन के स्थान पर, कहानियों का रंगमंचन किया जाता है।

साथ ही कहानियों की रचना में भी संवेदना और शिल्प के स्तर में नाटकीयता के गुणों को समावेशित किया जाता है।

कहानी का रंगमंच

कहानी के रंगमंचन का पहला सार्थक प्रयास देवेन्द्र राज अंकुर द्वारा निर्मल वर्मा की तीन कहानियों के मंचन द्वारा प्रारंभ किया गया। इसके साथ ही क्रमशः मोहन राकेश, प्रेमचंद

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इधनाथसिंह, हरिशंकर परसाई जैसे कई कहानीकारीकारों की कहानियों का भी सफल मंचन किया गया।

- इसके तहत पात्रों की कम संख्या रखी गयी और रंगमंच को साधारण संसाधनों के माध्यमों से सज्जित किया जाता है।
- 'कहानी में नाटकीयता लाने हेतु प्रकाश व्यवस्था, ध्वनि व्यवस्था आदि का, तथा छोटे संवाद, सूत्रधार की उपस्थिति आदि का भी पर्याप्त ध्यान रखा गया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) पृथ्वीराजरासो की काव्यगत विशेषताओं पर विचार करते हुए उसकी प्रामाणिकता के प्रश्न पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) रीतिकाव्य पर ललित कलाओं का प्रभाव किन रूपों में दिखाई पड़ता है? विवेचना कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) कृष्णभक्ति काव्यधारा के विकास में वल्लभाचार्य एवं विट्ठलनाथ के अवदान का मूल्यांकन कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'हिंदी नए चाल में ढली'-भारतेन्दु हरिश्चंद्र के इस कथन पर विचार कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आधुनिक काल में भाषा के क्षेत्र में कई परिवर्तन हुए जहाँ एक भारतेंदु युग में पद्य में ब्रजभाषा के प्रयोग में सहमति दी गई वो गद्य के क्षेत्र में खड़ी बोली के प्रयोग को स्वतंत्र स्वीकृति दी गई।

साथ ही हिन्दी की खड़ी बोली में भी कई परिवर्तन हुए जिसमें ब्रजभाषा की कुछ विशेषताओं को शामिल किया गया तो, अवधी की कुछ विशेषताओं को शामिल किया गया। इसलिये भारतेंदु हरिश्चंद्र ने कहा -

'हिन्दी नए चाल में ढली' यह वाक्य 1873 में भारतेंदु द्वारा कालचक्र जर्नल में कहा गया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

भारतेंदु की प्रमुख पुस्तकें -
बालाबोधिनी और कविवचनसुधा
पुरानी हिन्दी में लिखी गई थी।

परन्तु हरिश्चंद्र मैग्जीन
नई हिन्दी में लिखी गई।

हिन्दी नई चाल में ढली से तात्पर्य

(1) जब हिन्दुस्तानी शैली का प्रयोग स्पष्ट रूप से प्रारंभ हुआ।

(2) जिसमें न तो शिवप्रसाद सितारेहिंद की फारसीनिष्ठ शैली और न ही लक्ष्मणसिंह की संस्कृतनिष्ठ शैली का रंग मापित खड़ी बोली आधारित हिन्दुस्तानी शैली को अपनाया गया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(3) इस युग में रीतिकालीन परम्परता के स्थान पर नवजागरण की चेतना आधारित रचनाएं की गई जिसमें अतीत की प्रशंसा और जनता में अतीत के गौरव के प्रति सम्मान की भावना जागृत की गई।

(4) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा इस मान्यता का समर्थन किया गया तो वहीं रामविलास शर्मा द्वारा कहा गया कि अतीत के प्रति रोमानी भाव नवजागरण नहीं है। हिन्दुस्तानी शैली का प्रयोग पहले से ही प्रारंभ हो गया था अतः नाम उचित नहीं है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(5) भारतेंदु मण्डल के लेखकों द्वारा ज़िन्दादिली और मनोरंजनपरक रचनाएँ की गई।
उदा० प्रतापनारायण मिश्र
बालकृष्ण भट्ट

(6) हिन्दुस्तानी शैली में कई पत्र पत्रिकाएँ भी लिखी गई -
उदा० प्रतापनारायण मिश्र - ब्राह्मण
बालकृष्ण भट्ट - हिन्दी प्रदीप

(7) ये रचनाकार ज़िंदगी को रोना नहीं लिखते अपितु ज़िन्दादिली के साथ लिखते है।

इस प्रकार 1873 में हिन्दी का नया रूप दिखाई पड़ता है जो राष्ट्रीय चेतना के स्वरों को स्पंदित करता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'मुक्त छन्द' की अवधारणा पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मुक्त छंद की अवधारणा।

छायावादी कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला द्वारा दी गई।

मुक्त छंद से तात्पर्य ऐसे छंद से होता है जिसमें भावनाओं से प्रेरित लय तो होती है परन्तु तुक नहीं होता है।

- मुक्त छंद के सभी चरण सम नहीं होते है। अर्थात मात्राओं और वर्णों की संख्या समान नहीं होती है।
- निराला के मुक्त छंद में बंधन तो है परन्तु वह बाहरी नहीं अपितु

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आंतरिक है।

- अतः मुक्त छंद वह है जो छंद की भूमि में रहकर भी मुक्त रहता है।

- मुक्त छंद का समर्थक उसकी लय और प्रवाह ही है जो उसे सिद्ध करता है और आगे बढ़ाता है।

- निराला ने परिमल की भूमिका में लिखा है -

'मनुष्य की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति आवश्यक है। अतः मुक्त छंद अनुशासन से छुटकारा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

- निराला कविता को सामंतवादी ढाँचे से निकालकर मुक्त और स्वतंत्र विचारधारा से रचना पर विश्वास करते थे।

उदा० जूही की कली
- वह तोड़ती पत्थर
- सरोज स्मृति

आदि प्रमुख रचनाओं में उन्होंने मुक्त छन्दों की रचना की है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिंदी की आंचलिक उपन्यासधारा पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी साहित्य में आंचलिक उपन्यास धारा का विकास मूलतः फणीश्वरनाथ रेणु के आंचलिक उपन्यास मैला आंचल से माना जाता है।

आंचलिक उपन्यास की विशेषताएँ

(1) अंचल की भौगोलिक विशेषताओं का सूक्ष्म वर्णन

(2) सांस्कृतिक विशेषताओं जैसे रहन-सहन, गीत-संगीत, त्यौहार, वेशभूषा, भाषा-बोली का सजीव वर्णन

(3) आंचलिक उपन्यास में स्थानीय बोलचाल की भाषा का प्रयोग

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

साथ ही लोकोक्तियों - मुहावरों और देशज शब्दों का प्रयोग

(4) अंग्रेजी के शब्दों का ग्राम्यीकरण करना

(5) भाषाशैली में ध्वन्यात्मकता, काव्यात्मकता

(6) लोकगीतों, लोककथाओं का विस्तृत प्रयोग

(7) साधारण पात्रों को स्थान

(8) ग्रामीण जीवन की समस्त समस्याओं का यथार्थ वर्णन

हिन्दी के प्रमुख आंचलिक उपन्यासकार

(1) फणीश्वरनाथ रेणु - मैला आँचल
- परती परिकथा

(2) शिवपूजन सहाय - देहाती दुनिया

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

③ नागार्जुन - बलचनामा
④ रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ
⑤ रामदरश मिश्र - पानी के प्राचीर
⑥ उदयशंकर भट्ट - सागर लहरें और मनुष्य

इस प्रकार आंचलिक उपन्यास मुख्यतः किसी भौगोलिक स्थान के समस्त समस्याओं और अच्छाईयों का वर्णन करता है। इस उपन्यास में अंचल ही नायक होता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) हिन्दी की 'नया उपन्यास' धारा पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नया उपन्यास से आशय

ऐसे उपन्यास से है जिसमें चरम-यथार्थवाद का समावेशन हो जिसमें पारम्परिक उपन्यासों से हटकर, नवलेखन किया गया हो।

जिस तरह कहानी के क्षेत्र में नई कहानी आन्दोलन की शुरुआत हुई उसी प्रकार उपन्यास के क्षेत्र में भी नया उपन्यास धारा का विकास हुआ।

नया उपन्यास धारा के विकास के कारण -

(1) आजादी से मोहभंग जिसमे शहरी मध्यवर्ग में आत्मनिर्वासन, अजनबीपन, अकेलेपन की भावना जागृत हुई।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(3) शिक्षा के स्तर में वृद्धि, नारी स्वतंत्रता आदि के कारण स्त्री-पुरुष संबंध में बदलाव

(5) संयुक्त परिवार की संरचना का टूटना, पारिवारिक मूल्यों का कमजोर होना

(6) उपन्यास लेखन में शिल्प का महत्व कम होना, घटनाओं के स्थान पर परिस्थितियों का वर्णन

उपरोक्त कारणों से उपन्यास लेखन के क्षेत्र में नया उपन्यास धारा का विकास हुआ जिसने उपन्यास को यथार्थवाद के वास्तविक रूप से चित्रित किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1) मनोवैज्ञानिक उपन्यास धारा

इसके तहत मानव के जीवन का मूल्यांकन चेतन मन के स्थान पर अवचेतन और अचेतन मन के स्तर पर करना। मानव का सामाजिक व्यवहार उसके इड, ईगो और सुपर ईगो का परिणाम है। काम चेतना हेतु इडिपस ग्रंथि और इलेक्ट्रा ग्रंथि का वर्णन साथ ही लिबिडो का सिद्धांत

इस धारा में सार्त्र, सिग्मण्ड फ्रायड, कामू, युंग के दर्शन का प्रभाव है।

हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार

① जैनेन्द्र - परख, सुनीता, त्यागपत्र
② ~~[illegible]~~ -
③ अज्ञेय - शेखर: एक जीवनी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

समाजवादी/प्रगतिवादी उपन्यास

इसके अंतर्गत मार्क्सवाद के विचार को अपनाया गया है। व्यक्तिकेन्द्रीत उपन्यासों की रचना की गई। सर्वहारा वर्ग की संघर्ष-चेतना केन्द्र में

उदा० यशपाल - पार्टी कामरेड
- दादा कामरेड
- दिव्या
- देशद्रोही

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी रंगमंच के विकास में हिन्दी के प्रमुख रंग-निर्देशकों के योगदान पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्वतंत्रता पश्चात् हिन्दी रंगमंच के विकास कई नाटककारों रंगनिर्देशकों और अभिनयकर्ताओं का योगदान है।

प्रमुख रंग निर्देशक

① हबीब तनवीर - इनके द्वारा मौलिक रंगमंच की स्थापना की गई।

② आगा हश्र - इन्होंने भी नाटकविधा के विकास में सहायता की

③ इब्राहिम अल्काजी - इन्होंने भारतीय नाट्य विद्यालय में रंगमण्डल की स्थापना कर। भारतीय

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बलिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रंगमंच के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) महादेवी वर्मा की वेदनानुभूति पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

महादेवी वर्मा छायावादी काल की महान लेखिका रही है। जिन्होंने स्वच्छंदतावादी विचारों को अपने लेखन मे शामिल किया।

महादेवी की वेदनानुभूति

- इनके काव्य में मार्मिकता, आत्मीयता, चित्रात्मकता के दर्शन होते है।
- काव्य के केन्द्र बिंदु - दुःख, विरह, वेदना

मिलन का न नाम लो, मैं विरह में चिर हूँ।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

- महादेवी वर्मा ने अपनी रचनाओं में स्वयं के जीवन के दुखों का चित्रण किया है।

'वेदना में जन्म, करुणा में मिला आवास'

- उनके काव्यों में उनके अकेले जीवन का दुख और वेदना दिखाई देती है।

मैं नीर भरी दुख की बदली
परिचय इतना है, इतिहास यही
उमड़ी कल थी मीट आज चली

- नारी साहित्यकार होने के कारण इनके काव्यों में भावनाओं का गहन चित्रण।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

- महादेवी के काव्यों में वैयक्तिकता, आत्मचिंतन, प्रेम की वियोगपक्ष का वर्णन मुख्य है।

- महादेवी वर्मा की अन्य रचनाएँ
  दीपशिखा
  ~~[illegible]~~

इस प्रकार छायावाद में नारी की भावनाओं का चित्रण करने हेतु महादेवी वर्मा की वेदनानुभूति पाठकों के हृदय को छू जाती है। इसमें महादेवी के दुःख और विरह का मार्मिक चित्रण है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation